Toppersnotes
Unleash the topper in you

CGPSC

State Civil Services

Chhattisgarh Public Service Commission

(Preliminary & Main)

पेपर - 6 भाग - 1 और 2

दर्शनशास्त्र एवं समाजशास्त्र

SIERRA INNOVATIONS

Chhattisgarh Public Service Commission

पेपर - 6 भाग - 1 और 2

दर्शनशास्त्र एवं समाजशास्त्र

S.No.	Chapter Name	Page No.
	दर्शनशास्त्र	
1.	दर्शन का स्वरूप	1
2.	वेद एवं उपनिषद्	10
3.	भारतीय दर्शन की मूलभूत विशेषताएँ	13
4.	जैन दर्शन	28
5.	न्याय का दर्शन	68
6.	वैषेशिक दर्शन	70
7.	सांख्य दर्शन	76
8.	वेदान्त संप्रदाय	90
9.	भारतीय विचारक	109
10.	पश्चिमी विचारक	122
11.	धर्मनिरपेक्षता	181
12.	धर्म–दर्शन	188
13.	प्रशासन में नैतिक तत्व	199
14.	नैतिक मूल्य और नैतिक दुविधा	207
15.	लोक सेवकों के लिए आचार संहिता	213
16.	भ्रष्टाचार	216
	समाजशास्त्र	
1.	समाजशास्त्र – अर्थ, दायरा और प्रकृति	223
2.	समाज, समुदाय, संघ, संस्था, सामाजिक समूह, लोकमार्ग और मोरे	226
3.	व्यक्ति और समाज	230
4.	हिन्दू धर्म विशेषताएँ और मान्यताएँ	233

5.	प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक प्रणाली और आदर्श	239
6.	सामाजिक स्तरीकरण	246
7.	सामाजिक प्रक्रियाएँ	248
8.	समाजिक नियंत्रण और सामाजिक परिवर्तन	251
9.	भारतीय सामाजिक समस्याएँ	256
10.	सामाजिक अव्यवस्था	260
11.	समाजिक अनुसंधान और तकनीक	266

प्रिय विद्यार्थी, टॉपर्सनोट्स चुनने के लिए धन्यवाद।

नोट्स में दिए गए QR कोड्स को स्कैन करने लिए टॉपर्स नोट्स ऐप डाउनलोड करे ।

ऐप डाउनलोड करने के लिए दिशा निर्देश देखे :-

ऐप इनस्टॉल करने के लिए आप अपने मोबाइल फ़ोन के कैमरा से या गूगल लेंस से QR स्कैन करें ।

टॉपर्सनोट्स एग्जाम प्रिपरेशन ऐप

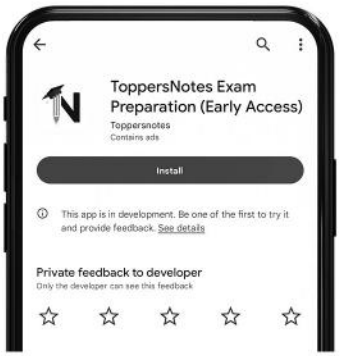

टॉपर्सनोट्स ऐप डाउनलोड करें गूगल प्ले स्टोर से ।

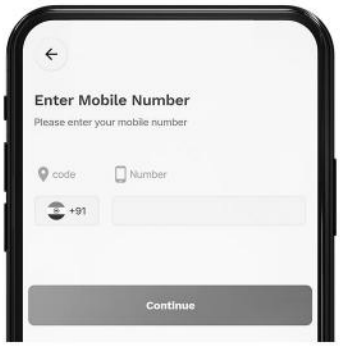

लॉग इन करने के लिए अपना **मोबाइल नंबर** दर्ज करें ।

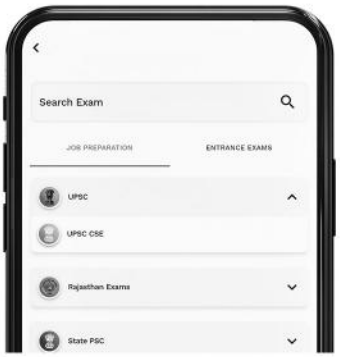

अपनी **परीक्षा श्रेणी** चुनें ।

सर्च बटन पर क्लिक करें ।

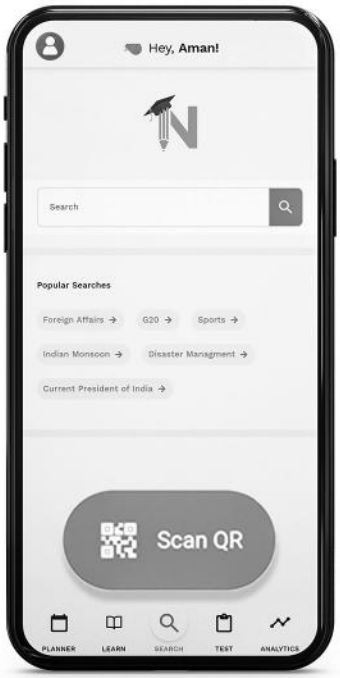

SCAN QR पर क्लिक करें ।

किताब के **QR कोड को स्कैन** करें ।

किसी भी तकनीकी सहायता के लिए
hello@toppersnotes.com पर मेल करें
या **766 56 41 122** पर whatsapp करें ।

दर्शन का स्वरूप
(पाश्चात्य एवं भारतीय)

परम्परागत तौर पर जीवन और जगत को उसकी समग्रता में समझने का निष्पक्ष, बौद्धिक, सर्वांगीण समीक्षात्मक एवं मूल्यात्मक प्रयास ही दर्शन कहलाता हैं। अंग्रेजी का 'Philosophy' शब्द दो ग्रीक शब्दों 'Philos' और 'Sophia' से बना हैं । 'Philos' का अर्थ होता है – प्रेम (Love) या अनुराग। 'Sophia' का अर्थ होता है – ज्ञान या विद्या (Wisdom)। इस प्रकार 'फिलॉसफी' का शाब्दिक अर्थ है– 'ज्ञान के प्रति प्रेम' (Love of Wisdom)। यहॉ ज्ञान का आशय सत्य के ज्ञान से है।

पाश्चात्य दर्शन का प्रारम्भ जिज्ञासा से होता हैं। यह जिज्ञासा जीवन और जगत से सम्बन्धित कुछ मूलभूत प्रश्नों से सम्बन्धित है, जैसे जीवन और जगत का मूल तत्व एवं स्वरूप क्या हैं? जीवन का लक्ष्य क्या हैं? आदि।

अपने प्रारम्भिक अवस्था में दर्शन में जगत् की उत्पत्ति और उसके अंतिम लक्ष्य की खोज का प्रश्न मुख्यतः था। 15वीं–16वीं शताब्दी में बेकन के मार्गदर्शन में दर्शन को बौद्धिक आलोक मिला। डेकार्ट ने निश्चित एवं असंदिग्ध ज्ञान की प्राप्ति के लिये संदेह विधि का सहारा लिया। 20वीं षताब्दी में उभरी प्रबल विचारधारा तार्किक प्रत्यक्षवाद के अनुसार दर्शन का कार्य वैज्ञानिक कथनों का स्पष्टीकरण एवं विश्लेषण कर उसके वास्तविक अर्थ का निरूपण करना हैं। इनके अनुसार तत्वमीमांसा निरर्थक (Meaningless) हैं।

भारतीय दार्शनिक परम्परा में फिलोसोफी को 'दर्शन' कहा जाता हैं। यह शब्द संस्कृत भाशा के 'दृश' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है 'देखना' अर्थात् साक्षात् ज्ञान प्राप्त करना। इसलिए दर्शन का तात्पर्य है जिसके द्वारा देखा जाए अथवा साक्षात्कार किया जाएं (दृश्यते अनेन इति दर्शनम्) इस साक्षात् ज्ञान को ही भारतीय परम्परा में तत्वज्ञान कहा जाता हैं। साधारणतः 'देखने' का आशय चक्षु इन्द्रिय द्वारा देखने या पंचज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त ज्ञान से लिया जाता हैं। किन्तु यहॉ 'देखना' चक्षु इन्द्रिय के अतिरिक्त सूक्ष्म नेत्रों से भी हो सकता हैं। सूक्ष्म नेत्र जिसे दिव्य चक्षु, ज्ञान चक्षु या प्रज्ञा चक्षु या अंतर्आत्मा भी कहा गया हैं। स्थूल नेत्रों से जहॉ भौतिक पदार्थों का ज्ञान प्राप्त होता है वहीं सूक्ष्म नेत्रों से सूक्ष्म आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति होती हैं। इस प्रकार 'दर्शन' का प्रयोग स्थूल एवं सूक्ष्म, भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों अर्थों में किया गया हैं। भारतीय मत के अनुसार लगभग सभी भारतीय दार्शनिक और दार्शनिक सम्प्रदाय परम तत्व के साक्षात्मकार को ही दर्शन मानते हैं। संक्षेप में, युक्तिपूर्वक तत्वज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न ही दर्शन हैं।

भारतीय दर्शन एवं पाश्चात्य दर्शन में अन्तर

पाश्चात्य दर्शन	भारतीय दर्शन
• पाश्चात्य दर्शन की उत्पत्ति जिज्ञासा से हुई हैं। अतः पाश्चात्य दर्शन का लक्ष्य जिज्ञासा को शान्त कर बौद्धिक सन्तोश प्रदान करना हैं। यही कारण हैं कि पाश्चात्य दर्शन का विकास लम्बवत् हुआ हैं। यहॉ विभिन्न दार्शनिकों की कोई शिष्य परम्परा या सम्प्रदाय नहीं दिखाई देता हैं। उदाहरण स्वरूप – डेकार्ट, स्पिनोजा, लाइबनित्ज इत्यादि विचारक क्रमिक रूप से आते हैं और जीवन एवं जगत के सन्दर्भ में अपनी दृष्टि को प्रस्तुत कर जिज्ञासा की सन्तुष्टि का प्रयास करते हैं। • पाश्चात्य दार्शनिक कोई विषेश जीवन पद्धति या मार्ग का निर्धारण नहीं करते। • बुद्धि का महत्व अधिक है, आध्यात्मिक अनुभूति का कम हैं।	• भारतीय दर्शन की उत्पत्ति मात्र जिज्ञासा से नहीं अपितु एक व्यावहारिक समस्या से हुई है। यह समस्या है – जीवन और जगत में व्याप्त असीम दुख से छुटकारा पाना। यही कारण हैं कि भारतीय दर्शन का उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति करना है, जहॉ दुःखों का पूर्ण विनाष हो जाता हैं। मोक्ष की प्राप्ति तभी होती है जब परम तत्व का साक्षात्मकार होता हैं। इसके लिए तद्नुरूप आचरण करना पड़ता हैं। विभिन्न दर्शन मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग बताते हैं। यहॉ विभिन्न दर्शनों की एक समानान्तर परम्परा है जिनके समर्थक हैं। खंडन–मंडन के क्रम में इन दर्शनों का विकास हुआ है एवं इनमें समृद्धि आई हैं। • प्रत्येक भारतीय दर्शन एक विषेश जीवन पद्धति को प्रस्तुत करता है जिसके अनुरूप आचरण कर सर्वोच्च लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती हैं। • आध्यात्मिक अनुभूति का महत्व अधिक है, यह अबौद्धिक न होकर अतिबौद्धिकता से सम्बन्धित हैं।

दर्शन का कार्य

(1) अस्तित्ववाद के अनुसार दर्शन का कार्य न तो जगत की व्याख्या करना है (विज्ञानवाद, भौतिकवाद, वस्तुवाद) और न ही उसमें परिवर्तन करना है (मार्क्सवाद)। इसका कार्य मनुष्य को जगत में साझीदार बनाना हैं।

(2) 20 वीं शताब्दी के एक मत तर्कीय प्रत्यक्षवाद के अनुसार दर्शनशास्त्र का कार्य

- विज्ञान को सुदृढ़ आधार प्रदान करना।
- तत्वमीमांसा का निरसन करना हैं।

दर्शन और जीवन

व्यक्ति के जीवन की दिशा उसके विचारों से संचालित एवं मार्गदर्शित होती हैं। बिना किसी ठोस वैचारिक आधार के जीवन में विश्रृंखलता एवं भटकाव की स्थिति आ जाती हैं। अतः आचरण में सामंजस्य एवं सद्भाव लाने के लिए विचारों में उत्कृष्टता एवं सामंजस्य का होना आवश्यक हैं। विचारों में सामंजस्य तभी सम्भव हैं जब उसकी आधारषिला के रूप में जीवन और जगत के विषय में सम्यक्, उत्प्रेरक एवं सुदृढ सिद्धान्त प्रस्तुत हों। सिद्धान्त जीवन के प्रति व्यक्ति के दृष्टिकोण को स्थिर करते है और उसकी क्रियाओं के मध्य एक संतुलन एवं सामंजस्य स्थापित करते हैं। विचारों के निर्माण में दर्शन की महती भूमिका हैं। यह जीवन–दिशा निर्धारित करता हैं।

अरस्तू के अनुसार मानव–जीवन के दो पहलू हैं। पहला पशुत्व और दूसरा विचारशीलता। इनमें से दूसरा पहलू प्रधान हैं। शारीरिक पक्ष की संतुष्टि एवं उपभोग के सन्दर्भ में पशु और मानव में समरूपता हैं। परन्तु पशु और मनुष्य में विचारशीलता के स्तर पर वास्तविक गुणात्मक भेद उभर कर सामने आ जाता हैं। विचारशील पक्ष मनुष्य को एक सार्थक मानव जीवन व्यतीत करने एवं जीवन एवं जगत के सच्चे स्वरूप को जानकर उनके प्रति अपना एक दृश्टिकोण बनाने में मदद करता हैं। स्पष्ट है कि जीवन से दर्शन का सीधा एवं अनिवार्य सम्बन्ध हैं।

मानव जीवन में दर्शन की आवश्यकता

- राधाकृष्णन् के अनुसार दर्शन का मुख्य लक्ष्य निर्माणात्मक एवं सृजनात्मक हैं। सच्च दर्शन मानव–जाति को असत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर, असंतोष से संतोष की ओर ले जाता हैं। इस रूप में यह जीवन के उपयोगी हैं।
- मानव–जीवन दर्शन के बिना असम्भव है क्योंकि दर्शन मानव का स्वभाव या मूल प्रवृत्ति हैं। दर्शन या दार्शनिक प्रवृत्ति ही मानव की पहचान हैं। मानव एक विवकेशील प्राणी हैं। उसकी विवेकशीलता उसके चिन्तन या दर्शन में स्पष्ट रूप से प्रकट होती हैं। मानव का दर्शन उसके जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करता हैं। मानव का जीवन अकेला नहीं है अपितु वह समाज का एक अंग हैं। इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से दर्शन सम्पूर्ण समाज को एवं सामाजिक जीवन को प्रभावित करता हैं। समाज में होने वाले परिवर्ततनों, संशोधनों, सामाजिक सुधारों, रूढ़ियों, अंधविश्वासों एवं कुरीतियों के विरोध में दर्शन की प्रासंगिता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति का एक जीवन–दर्शन होता है जिसके आधार पर वह जीवन जीता हैं। जिसके जीवन–दर्शन में स्पष्टत, वैचारिक संगति, वास्तविकता एवं मूल्यात्मक पक्ष अधिक होता है, उसका जीवन व्यवस्थित एवं खुशहाल होता हैं।
- दर्शन की एक शाखा नीतिशास्त्र मानव आचरण के आदर्श की मीमांसा करती है, ताकि उसके आधार पर मनुष्य के कर्तव्य–अकर्तव्य और उसके कर्मो के औचित्य– अनौचित्य का निर्धारण किया जा सके। दूसरे शब्दों में जीवन में क्या उचित है, क्या अनुचित है, हमें क्या करना चाहिए या क्या नहीं करना चाहिए, इसकी शिक्षा नीतिशास्त्र प्रदान करता हैं। यह परोक्ष रूप से जीवन के विभिन्न पक्षों यथा – धर्म, राजनीति, अर्थशास्त्र, शिक्षा, विधि आदि के सन्दर्भ में उचित एवं अनुचित की धारणा के आधार पर मार्गदर्शक का काम करता हैं । इस प्रकार नीतिशास्त्र मनुष्य के नैतिक उत्थान तथा विचारों एवं जीवन के परिष्करण में सहायक हैं।
- दर्शन का हमारे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक जीवन पर प्रभाव पड़ता हैं। विभिन्न राजनैतिक शासन पद्धतियॉ विविध दार्शनिक दृष्टिकोण का परिणाम हैं।

  उदाहरणस्वरूप – जनतंत्र – वाद का मूल 'मानव–मात्र में समानता' का दार्शनिक दृष्टिकोण हैं। राजतंत्र–वाद का मूल राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि मानना हैं। मार्क्स और गांधी के आर्थिक विचारों में आर्थिक एवं सामाजिक न्याय की स्थापना के उपाया बताये गये हैं। इसी प्रकार व्यक्ति और राज्य के सम्बन्ध, व्यक्ति–व्यक्ति के मध्य सम्बन्ध कैसा होना चाहिए, इसकी शिक्षा भी दर्शन प्रदान करता हैं।
- शारीरिक स्वास्थ्य एवं मानसिक समृद्धि में योग–दर्शन की भूमिका निर्विवाद हैं।
- दर्शन सांस्कृतिक जीवन के सभी पहलुओं (जैसे–नृत्य, संगीत, कला, साहित्य आदि) को प्रभावित करता हैं। उदाहरणस्वरूप भारतीय दर्शन मूल रूप से आध्यात्मिक हैं। परिणामस्वरूप भारतीय संगीत, नृत्य, कला और साहित्य में भी आध्यात्मिकता के प्रति रूझान दिखाई देता हैं।
- अस्तित्ववाद, मानववाद आदि का प्रभाव भी मानव जीवन पर दिखाई देता हैं।
- दर्शन हमारी चिन्तन शक्ति को विकसित करता है तथा गहनतम विशयों पर भी संगत एवं तार्किक रूप से विचार–विमर्श करने की शक्ति प्रदान करता हैं।
- दर्शन हमें मानवीय मूल्यों के प्रति सचेत कर हमें सच्चा मानव बनाने की चेष्टा करता हैं।
- दार्शनिक चिन्तक मानवीय व्यक्तित्व के पथ–प्रदर्शक का काम करता हैं।
- दार्शनिक चिन्तन मनुष्य को अतिवाद से मुक्त करता हैं।

आक्षेप

(1) दर्शन केवल बुद्धि विलास या मानसिक व्यायाम (Intellectual Gymnasium) है, व्यावहारिक जीवन एवं उसकी समस्याओं से इसका संबंध नही हैं। दर्शन जीवन की तात्कालिक आवष्यकताएं जैसे – रोटी, कपड़ा, मकान, इत्यादि का कोई व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत नहीं करता।
(2) दर्शन गूढ़ तथ्यात्मक समस्याओं के समाधान के लिए परिकल्पना (speculation) का सहारा लेता है परन्तु इन समस्याओं का वास्तविक हल नहीं निकल सकता।
(3) दर्शनशास्त्र का संबंध मुख्यतः अमूर्त्त चिन्तन एवं अलौकिक बातों से हैं।
(4) समकालीन युग में तार्किक भाववादी तत्वमीमांसा को निरर्थक बताते हैं।

मूल्यांकन

(1) यह सही है कि दर्शन मनुष्य की तात्कालिक आवश्यकताओं के सन्दर्भ में विशेष बात नहीं करता है परन्तु सार्थक मानव जीवन कैसे व्यतीत किया जाये, इसकी शिक्षा अवश्य देता हैं। इस रूप में दर्शन मानवीय जवीन और अनुभूति के गुणात्मक विकास का उपकरण हैं।
(2) बड़े सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों के पीछे दार्शनिक चिन्तन का ही हाथ रहा हैं। जब कोई विचारक विश्व और जीवन के प्रति नवीन दृष्टिकोण स्थापित करता है तो उसका प्रभाव समाज, राजनीति एवं अर्थव्यवस्था पर भी पड़ता हैं। मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, बेन्थम एवं मिल का उपयोगितावादी दृष्टिकोण, रॉल्स का न्याय सिद्धान्त आदि इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं।
(3) वर्तमान समाज में जब मूल्यविहीन भोतिक प्रगति, धर्म के विकृत रूप, स्वार्थ–लोलुपता, भौतिकवादी प्रवृत्ति के प्रसार के कारण परस्पर वैमनस्य, कटुता, शोषण, अत्याचार बढ़ रहे हैं, वैसी स्थिति में जीवन में सुव्यवस्था लाने के लिए, जीवन के स्वस्थ्य मूल्यों को पुनः जागृत कर, उन्हें युगानुकूल बनाकर समाज के समक्ष प्रस्तुत करने में दर्षन की भूमिका महत्वपूर्ण एवं अपरिहार्य हैं । ऐसा करने पर ही जीवन की अशांति मिट सकती हैं।

स्पष्ट है कि दर्शन के बिना अर्थपूर्ण, गरिमापूर्ण, आनन्दपूर्ण मानव जीवन सम्भव नहीं हैं। दर्शन के अभाव में मानव जीवन पशुतुल्य हो जायेगा।

दर्शन और विज्ञान

परम्परागत रूप से ऐसा कहा जा सकता है कि दर्शन जीवन और जगत के प्रारम्भ एवं अन्त या लक्ष्य को जानने का एक निश्पक्ष, सर्वांगीण, समीक्षात्मक एवं बौद्धिक प्रयास हैं । अर्वाचीन विचारधारा के अनुसार दर्शन सम्प्रत्ययों का तार्किक विश्लेषण है । जबकि दूसरी और विज्ञान मानवीय ज्ञान की एक विशिष्ट शाखा है जिसमें विश्व के भिन्न – भिन्न अंगो का युक्तिपूर्ण विवेचन होता हैं । एक विषेश विज्ञान किसी क्षेत्र विषेश का ही अध्ययन करता हैं। उदाहरणस्वरूप–भौतिक विज्ञान का विषय भौतिक जगत है जबकि जीव विज्ञान का विषय जीव जगत। स्पष्ट है कि जहां दर्शन समग्र विश्व का सामान्य (general) अध्ययन करता है वहीं विज्ञान विश्व के किसी एक खास विभाग का विशिष्ट (specialized) अध्ययन करता हैं।

दर्शन और विज्ञान में अन्य अंतर

- प्रत्येक विज्ञान विश्व के किसी एक क्षेत्र विशष्ज्ञ का अध्ययन करता हैं। जबकि दर्शन का क्षेत्र संपूर्ण विश्व हैं। इसी कारण दर्शन की व्याख्या वैज्ञानिक व्याख्या से अधिक व्यापक होती हैं। स्पेन्सर के अनुसार – विज्ञान अंषतः एकीकृत ज्ञान है जबकि दर्शन पूर्णतया एकीकृत ज्ञान हैं। दर्शन सबसे अधिक सामान्य कोटि का ज्ञान है। वह यह ज्ञान है जो विज्ञानों द्वारा दिए गए कथनों को एक समष्टि रूप में एकताबद्ध कर देता हैं।
- दर्शन की प्रकृति चिन्तनात्मक है जबकि विज्ञान की प्रकृति प्रयोगात्मक हैं।

- विज्ञान ज्ञानेन्द्रियों द्वारा जाने गये विषय, जिनका अनुभव और परीक्षण हो सकता है, तब सीमित है। जबकि दर्शन ज्ञानेन्द्रियों से परे के क्षेत्रों पर भी विवेचना करता हैं, जैसे – कर्म–नियम, मूल्य, मोक्ष इत्यादि।
- विज्ञान 'क्या' और 'कैसे' की व्याख्या करता हैं। जबकि दर्शन 'क्यों' की भी व्याख्या करता हैं।
- विज्ञान कुछ मान्यताओं पर आधारित हैं। दर्शन में इन मान्यताओं की भी समीक्षा की जाती हैं।
- विज्ञान का संबंध सत्य से है, जबकि दर्शन का संबंध सत्य,शुभ और सोन्दर्य तीनों से हैं।
- विज्ञान वर्णनात्मक एवं तथ्यपरक होता हैं। दर्शन में मूल्यात्मक पक्ष प्रबल हैं।
- विज्ञान में धर्म की निंदा का भाव प्रधान है, जबकि दर्शन में धर्म की निंदा नहीं, अपितु उसमें निहित सत्यता को जानने का प्रयास किया जाता हैं।

समानता

- दर्शन और विज्ञान दोनों की उत्पत्ति जीवन और जगत् के प्रति आश्चर्य और संदेह की भावना से हुई हैं।
- दर्शन और विज्ञान दोनों में आगमन और निगमन, संश्लेषण एवं विश्लेषण की विधियों का प्रयोग किया जाता हैं।
- दोनों का लक्ष्य सत्य की खोज है, निश्चित एवं यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति करना है तथा सार्वभौमक नियमों की स्थापना का प्रयास करना हैं।

दर्शन और विज्ञान एक–दूसरे के पूरक हैं

कुछ अन्तरों के होते हुए भी विज्ञान और दर्शन में निकट का सम्बन्ध हैं। दोनों एक दूसरे के अध्ययन में सहायक हैं। वास्तव में वे एक दूसरे के पूरक हैं।

(A)दर्शन विज्ञान के लिये उपयोगी है –

- विज्ञान की मान्यताओं का विवेचन कर दर्शन वैज्ञानिक अध्ययन की नींव को मजबूत करता हैं।
- समकालीन पाश्चात्य दर्शन विशेष रूप से वैज्ञानिक अवधारणाओं के विश्लेषण और स्पष्टीकरण की बात करता है तथा विज्ञान को अधिक सुग्राह्म बनाता हैं। यही कारण है कि विज्ञान– दर्शन (Philosophy of Science) दर्शन का एक प्रमुख अंग बन गया हैं।
- दर्शन वैज्ञानिक निष्कर्षों मे समन्वय स्थापित कर उनमें सर्वांगीणता लाता है और समूचे विश्व के प्रसंग में उसकी अर्थपूर्णता निर्धारित करता हैं।
- दर्शन ने विज्ञान को कुछ ऐसी पूर्व–कल्पनाएँ (Hypothesisi) प्रदान किए जिन पर प्रायोगिक जॉच कर विज्ञान ने कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांतों को जन्म दिया हैं। उदाहरणस्वरूप परमाणु सिद्धान्त।
- दर्शन की परिकल्पनात्मक पद्धति (Speculative method) का उपयोग अब विज्ञान में भी हो रहा हैं। भौतिक विज्ञान अपने उच्चतर स्तर पर परिकल्पनात्मक दर्शन का रूप ले चुका हैं। आज उसके अन्दर परिकल्पना और प्रयोग साथ–साथ चल रहे हैं।
- दर्शन समस्त विज्ञानों की जननी हैं। दर्शन के क्षेत्र में जैसे–जैसे निष्चित निष्कर्ष मिलते गए और जो प्रायोगिक जॉचों पर खरे उतरे, वैसे–वैसे क्रमिक रूप से विज्ञानों का जन्म एवं विकास हुआ और वे दर्शन से अलग होते गए। वर्तमान में दर्शन के अन्दर जो विचार–विमर्श चल रहा है वे भी भविष्य के नए विज्ञानों की विषय–वस्तु ही हैं।

(B) विज्ञान दर्शन के लिए उपयोगी है –

- दर्शन जिस विश्व का ज्ञान ढूढता है उसी विश्व के भिन्न – भिन्न अंगो का ज्ञान विज्ञानों का साध्य हैं। अतः विज्ञानों की प्रगति और खोजों का प्रभाव दर्शन पर पड़ता हैं
- अंधविश्वास, पूर्वाग्रह को दूर करने में।
- मूल तत्व के स्वरूप के संबंध में दार्शनिक विवादों के निपटारें में।
- जीव–विज्ञाान तथा वनस्पति विज्ञान संबंधी खोजों ने विकासवादी अवधारणा की पुष्टि की जिससे दार्शनिक विश्व की उत्पत्ति के प्रश्न पर विकासवाद की ओर उन्मुख हुए।

धर्म और विज्ञान में अंतर

धर्म	विज्ञान
1. धर्म मूलतः आस्था एवं विश्वास पर आधारित हैं।	1. विज्ञान आनुभविक निरीक्षण एवं परीक्षण पर आधारित हैं।
2. धर्म का संबंध अलौकिक सत्ता एवं आदर्शों से हैं।	2. विज्ञान का संबंध लौकिक घटनाओं से हैं।
3. आत्मनिष्ठ ज्ञान की प्राप्ति।	3. वस्तुनिष्ठ ज्ञान की प्राप्ति।
4. धर्म में व्यक्तिगतता होती है अर्थात् धार्मिक ज्ञान का हम व्यक्तिगत परीक्षण कर सकते हैं। (सार्वजनिक परीक्षण नहीं।)	4. विज्ञान में सार्वजनिकता होती हैं। इसमें हम वैज्ञानिक ज्ञान का सार्वजनिक परीक्षण करते हैं ।
5. मान्य विश्वास।	5. परीक्षित विश्वास।
6. दैव–प्रकाशना, रहस्यानुभूति आदि पर आधारित।	6. अनुभाविक तथ्यों पर आधारित हैं।
7. तर्कबुद्धि द्वितीय स्तर पर।	7. विज्ञान में तर्कबुद्धि की प्राथमिकता पाई जाती हैं।
8. 'श्रद्धावान लभते, संशयात्मा विनश्यति' अर्थात् जो ईश्वर में श्रद्धा रखते, उन्हें वह प्राप्त हो जाता है और जो संशय रखते है, उनका विनाश हो जाता हैं।	8. 'संशयात्मा लभतेः, श्रद्धावान विनशयित।' जो संशय करता है उसे प्राप्ति होती है जबकि जो श्रद्धावान है, वह विनष्ट हो जाता हैं
9. धर्म में 'हम लोग' और 'वे लोग' की बात उभरते हैं।	9. विज्ञान में सबके लिए की बात होती हैं।
10. सामान्यतः संशोधन स्वीकार्य नहीं।	10. विज्ञान में आवश्यकतानुसार संशोधन स्वीकार्य हैं।

फ्रांसीसी दार्शनिक कोम्टे के अनुसार – 'दर्शन विज्ञानों का विज्ञान हैं।' समकालीन पाश्चात्य दार्शनिक रसेल के अनुसार – ''दर्शन विज्ञान के आधारभूत सिद्धांतों का तार्किक अध्ययन हैं।'' वर्तमान युग में प्रतिष्ठित वैज्ञानिक भी अब यह मानने लगे हैं कि वैज्ञानिक चिन्तन की अन्तिम परिणति दर्शन में ही होती हैं।

दर्शन एवं धर्म में अन्तर

- दर्शन प्रमाण एवं तर्कबुद्धि पर आधारित है, जबकि धर्म में आस्था और विश्वास प्रधान हैं।
- दर्शन निष्पक्ष एवं तटस्थ अध्ययन पर जोर देता है, जबकि धर्म का दृष्टिकोण पक्षपातपूर्ण होता हैं।
- दर्शन का उद्देश्य विश्व की व्याख्या करना, सत्य का ज्ञान प्राप्त करना हैं। जबकि धर्म का उद्देश्य आध्यात्मिक मूल्यों की वास्तविक सिद्धि हैं।
- दर्शन विभिन्न धर्मों अथवा अनेक धर्मों में समाविष्ट सामान्य सिद्धांतों की भी खोज करता है, जबकि प्रत्येक धर्म इसी एक विशेष विश्वास पद्धति से सम्बद्ध होता है और उसी पद्धति विशेष के अध्ययन से संतुष्ट भी रहता हैं।
- दर्शन की उत्पत्ति जिज्ञासा से, बुद्धि की मांग से होती है, जबकि धर्म की उत्पत्ति आध्यात्मिक भूख से होती हैं। आध्यात्मिक भूख भावनात्मक (emotional) होती हैं।
- दर्शन में तार्किक विधि का आश्रय लिया जाता है, जबकि धर्म में ज्ञान, श्रद्धा, भक्ति को विशेष महत्व दिया जाता हैं।

दर्शन और धर्म में सम्बन्ध

यद्यपि दर्शन और धर्म कई सन्दर्भों में एक दूसरे से भिन्न हैं फिर भी वे एक–दूसरे से निकटता रखते हैं ।

- दोनों का सम्बन्ध विश्व के कुछ आधारभूत प्रश्नों से होता हैं।
- दोनों का लक्ष्य परमार्थ सत्ता की खोज हैं।
- दर्शन धर्म की समीक्षात्मक विवेचना करता है, परिणामस्वरूप धर्म अंधविश्वास एवं रूढ़िवादिता से मुक्त हो जाता हैं।
- दर्शन धर्म की दार्शनिक पृष्ठभूमि को सबलता प्रदान करता है। धर्म– दर्शन का एक विभाग है जिसमें धार्मिक विश्वासों की तार्किक समीक्षा की जाती हैं। परिणामस्वरूप धार्मिक विश्वासों को संगत एवं युगानुकुल बनाने में मदद मिलती हैं।
- ब्रेड़ले, बर्गेसा, राधाकृष्णन आदि का मानना है कि धर्म अन्तः प्रज्ञात्मक अथवा रहस्यात्मक अनुभूतियों के आधार पर चरम सत्ता के स्वरूप की एक झॉकी प्रस्तुत करता हैं। इसी के आधार पर तर्क एवं बुद्धि का सहारा लेकर एक विश्व दृष्टि निर्धारित करने का काम दर्शन करता हैं।

भारतीय सन्दर्भ

- भारतीय सन्दर्भ में दर्शन और धर्म में घनिष्ठ सम्बन्ध हैं । जीवन में व्याप्त दुःखों और समस्याओं से ही भारत में दर्शन और धर्म दोनों की उत्पत्ति होती हैं । यहॉ दोनों का लक्ष्य व्यावहारिक हैं – ''जीवन के दुखों से छुटकारा पाना ।''
- यही कारण है कि भारतीय सन्दर्भ में दर्शन और धर्म में प्रारम्भ से ही एकात्म रहा हैं ।

दर्शन और संस्कृति

संस्कृति क्या हैं ?

शाब्दिक रूप से 'संस्कृति' शब्द की उत्पत्ति 'संस्कृत' से हुई हैं। संस्कृत का अर्थ है – परिष्कृत। अतः 'संस्कृति' का सम्बन्ध ऐसे तत्वों से है जो व्यक्ति का परिष्कार कर सकें । एक अन्य व्याख्या के अनुसार 'संस्कृति' शब्द संस्कार से बना हैं। संस्कार का अर्थ है – 'शुद्धि की प्रक्रिया'। यहॉ शुद्धि का अर्थ सामाजिकता से हैं। आशय है कि व्यक्ति को एक सामाजिक प्राणी बनाने में जितने भी तत्वों का योगदान होता है, उन सभी तत्वों की व्यवस्था का नाम ही संस्कृति हैं। यह मानव के विचारों एवं व्यवहारों के प्रतिमान को इंगित करती हैं।

नैतिक दृष्टिकोणों से संस्कृति सुन्दर वस्तुओं के आनन्द, मानवीय दृष्टि से मूल्यवान ज्ञान और समूहों द्वारा मान्य उचित सिद्धान्तों से सम्बन्धि है।

टाइलर के अनुसार – ''संस्कृति समग्र का एक संकुल है, जिसमें ज्ञान, विश्वासय, कला, नैतिक शिक्षा, कानून, रीति–रिवाज तथा अन्य क्षमताओं एवं आदतों का समावेश रहता हैं और जिसे व्यक्ति समाज का सदस्य होने के नाते प्राप्त करता हैं।''

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि संस्कृति मनुष्यों के समग्र जीवन का एक तरीका है, यह मनुष्य के सामाजिक व्यवहारों को निश्चित करती है और जीवन के आदर्श और सिद्धान्तों को प्रकाश देती हैं। संस्कृति के द्वारा निर्धारित संस्कारों के माध्यम से ही समाजीकरण एवं मानवीकरण होता हैं। संस्कृति की निम्नलिखित विशेषतायें हैं –

- संस्कृति सीखा हुआ व्यवहार हैं।
- संस्कृति में हस्तांतरित होने का गुण हैं।

- संस्कृति एक संग्रहित ज्ञान है जिसमें संशोधनों एवं संकलनों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तान्तरित किया जाता हैं।
- संस्कृति गतिशील हैं।
- संस्कृति समूह का आदर्श होती हैं।
- संस्कृति में सामाजिकता, अनुकूलता एवं आवश्यकता पूर्ति का गुण हैं।
- प्रत्येक समाज की संस्कृति अलग–अलग होती हैं।

सभ्यता का अर्थ

मैकाइबर एवं पेज के अनुसार – ''सभ्यता से हमारा अर्थ अपने जीवन की दशाओं को नियंत्रित करने के लिए मानव द्वारा नियोजित सम्पूर्ण संगठन एवं यांत्रिकता से हैं।'' सभ्यता का सम्बन्ध ऐसे सभी पदार्थों से है जिनको मूर्त रूप से देखा जा सके, जो पदार्थ हमें अपनी विरासत में मिलते हैं तथा जिसे हम अपनी आवश्यकता के अनुसार निर्माण करते हैं।

सभ्यता की विशेषताएँ

- सभ्यता प्रमुख रूप से संस्कृति का भौतिक पक्ष हैं।
- सभ्यता के अन्तर्गत आने वाली वस्तुएं हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन हैं।
- पदार्थ निर्माण की तकनीक भी सभ्यता में सम्मिलित हैं।
- सभ्यता एक परिवर्तनशील अवधारणा हैं।
- सभ्यता के अनुपयोगी अंग को प्रायः व्यक्ति त्याग देता हैं।

सभ्यता और संस्कृति में अन्तर

(1) सभ्यता की माप सम्भव है परन्तु संस्कृति की नहीं। सभ्यता का सम्बन्ध उपयोगिता के क्षेत्र से है जबकि संस्कृति का मूल्यों के क्षेत्र से हैं। हम विभिन्न भौतिक वस्तुओं की उपयोगिता का माप करके यह बता सकते हैं कि कौन अधिक उपयोगी है या कौन कम उपयोगी हैं। दूसरी ओर, संस्कृति की श्रेष्ठता या निम्नता का कोई मापक नहीं हैं।
(2) सभ्यता सदा प्रगति करती है किन्तु संस्कृति नहीं।
(3) सभ्यता को बिना किसी परिवर्तन के प्राप्त किया जा सकता है, परन्तु संस्कृति को नहीं।
(4) संस्कृति साध्य है जबकि सभ्यता साधन हैं।

इन अन्तरों के होते हुए भी सभ्यता और संस्कृति में सम्बन्ध हैं। इस सम्बन्धों को निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत देखा जा सकता हैं –

(1) सभ्यता संस्कृति की वाहिका हैं।
(2) सभ्यता सांस्कृतिक क्रियाओं को शक्ति प्रदान करती हैं।
(3) सभ्यता संस्कृति का पर्यावरण हैं।
(4) संस्कृति सभ्यता की दिशा को प्रभावित करती हैं।

वस्तुतः सभ्यता और संस्कृति दोनों मनुष्य की सृजनात्मक क्रिया के कार्य या परिणाम हैं। जब यह क्रिया उपयोगी लक्ष्य की ओर गतिमान होती है तब सभ्यता का जन्म होता है और जब मूल्य – चेतना को प्रबुद्ध करने की ओर अग्रसर होती है तब संस्कृति का उदय होता हैं।

समाजशास्त्र

समाजशास्त्र

समाजशास्त्र– अर्थ, दायरा और प्रकृति, इसके अध्ययन का महत्व। अन्य सामाजिक विज्ञानों के साथ संबंध

समाजशास्त्र मानव समाज और मानव सामाजिक गतिविधियों से संबंधित सामाजिक विज्ञान में एक अनुशासन है। यह सबसे युवा सामाजिक विज्ञानों में से एक है, एक फ्रांसीसी सामाजिक विचारक, ऑगस्टे कॉम्टे को पारंपरिक रूप से 'समाजशास्त्र के पिता' के रूप में जाना जाता है क्योंकि उन्होंने 1839 में 'समाजशास्त्र' शब्द गढ़ा था।

समाजशास्त्र का दायरा

स्कोप का अर्थ है विषय वस्तु या अध्ययन के क्षेत्र या किसी विषय की सीमाएँ। किसी विशेष विषय में हमें जो अध्ययन करना होता है, उसे उसका दायरा कहते हैं। प्रत्येक विज्ञान का अपना अन्वेषण क्षेत्र होता है। किसी विज्ञान का व्यवस्थित रूप से अध्ययन करना तब तक कठिन हो जाता है जब तक कि उसकी सीमा या क्षेत्र का ठीक–ठीक निर्धारण न हो जाए। एक सामाजिक विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र का अपना दायरा या सीमाएँ हैं। लेकिन समाजशास्त्र के दायरे के बारे में कोई एक राय नहीं है। हालाँकि, समाजशास्त्र के दायरे के संबंध में विचार के दो मुख्य विद्यालय हैं:

- स्पेशलिस्टिक या फॉर्मलिस्टिक स्कूल और सिंथेटिक स्कूल। दोनों स्कूलों के बीच समाजशास्त्र के दायरे को लेकर काफी विवाद है।

विशिष्ट विद्यालय

इस विचारधारा के समर्थक जॉर्ज सिमेल, वीरकांट मैक्स वेबर, वॉन विसे, स्मॉल और एफटोनीज हैं। उनका मानना है कि समाजशास्त्र एक विशिष्ट, शुद्ध और स्वतंत्र विज्ञान है और इसलिए इसका दायरा सीमित होना चाहिए।

सिंथेटिक स्कूल

सिंथेटिक स्कूल के समर्थक दुर्खीम, गिन्सबर्ग, कॉम्टे, सोरोकिन, स्पेंसर, एफ वार्ड और एल.टी हॉबहाउस जैसे समाजशास्त्री हैं। इसके अनुसार स्कूल समाजशास्त्र का अन्य सामाजिक विज्ञानों से गहरा संबंध है। यह सामाजिक विज्ञानों का संश्लेषण है। इस प्रकार इसका दायरा बहुत विशाल है।

समाजशास्त्र की प्रकृति और विशेषताएं

शुरू करने के लिए, समाजशास्त्र एक मूल्य–मुक्त अनुशासन के रूप में विकसित हुआ है। यह इस बात से संबंधित है कि क्या नहीं होना चाहिए। समाज जिन मूल्यों को कायम रखता है और जो पुरुषों के सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करते हैं, उन्हें समाजशास्त्रियों ने तथ्यों के रूप में स्वीकार किया है और निष्पक्ष रूप से विश्लेषण किया है।

वे स्वयं मूल्यों का विश्लेषण नहीं करते हैं। इस प्रकार यह नैतिकता या धर्म की तरह एक मानक अनुशासन नहीं है। इसके अलावा, समाजशास्त्री केवल उस दिशा को इंगित करते हैं जिस दिशा में समाज आगे बढ़ रहा है और समाज को किस दिशा में जाना चाहिए, इस पर विचार व्यक्त करने से परहेज करते हैं। इस संबंध में इसे सामाजिक और राजनीतिक दर्शन से अलग करना है।
दूसरा, समाजशास्त्र एक अनुभवजन्य अनुशासन है। यह सामाजिक परिघटनाओं के अपने विश्लेषण में तर्कसंगत विचारों द्वारा निर्देशित होता है न कि विचारधारा के संदर्भ में।

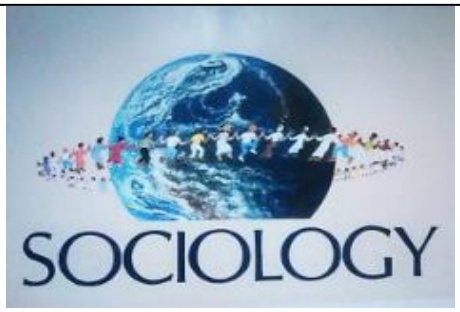

तीसरा, समाजशास्त्र भौतिकी, रसायन विज्ञान या गणित जैसे अमूर्त विषय के रूप में विकसित हुआ है, न कि इंजीनियरिंग या कंप्यूटर विज्ञान जैसे व्यावहारिक विज्ञान के रूप में। एक समाजशास्त्री समाज का विभिन्न कोणों से विश्लेषण करता है और समाज और सामाजिक अंतःक्रियाओं के पैटर्न के बारे में ज्ञान प्राप्त करता है।

चौथा, समाजशास्त्र एक सामान्य है न कि एक विशेष सामाजिक विज्ञान। यह सामान्य रूप से मानवीय संबंधों और सामाजिक अंतःक्रियाओं के पैटर्न से संबंधित है न कि इसके किसी विशेष पहलू से। एक अर्थशास्त्री अपना ध्यान केवल आर्थिक क्षेत्र में बातचीत तक ही सीमित रखता है।

इसी तरह, एक राजनीतिक वैज्ञानिक मुख्य रूप से केवल राजनीतिक क्षेत्र में बातचीत से संबंधित होता है। एक समाजशास्त्री, हालांकि, अपना ध्यान मानवीय या सामाजिक संबंधों पर केंद्रित करता है जो इन सभी विशिष्ट क्षेत्रों के लिए सामान्य हैं।

इसके अध्ययन का महत्व

समाजशास्त्र का सबसे अधिक महत्व यह है कि इसने समाज की सामाजिक संस्थाओं का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन किया। मानव संबंधों के विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र के महत्व को हाल ही में महसूस किया जा रहा है। समाज के वैज्ञानिक अध्ययन और मानव कल्याण के वैज्ञानिक प्रचार की लंबे समय से उपेक्षा की गई है। अब समाज का सही मायने में वैज्ञानिक अध्ययन चल रहा है।

वास्तव में सामाजिक घटनाओं का अध्ययन और गिडिंग्स जिसे मानव पर्याप्तता कहते हैं, को बढ़ावा देने के तरीकों और साधनों का अध्ययन उन सभी विषयों में से सबसे तार्किक और उचित है जिन्हें वैज्ञानिक बनाया जाना चाहिए। यदि हमें सामाजिक प्रगति करनी है तो यह सदी विकासशील मानव और सामाजिक कल्याण की होनी चाहिए। इसलिए, कई लोगों द्वारा यह सही सोचा गया है कि समाजशास्त्र सभी सामाजिक विज्ञानों के लिए सबसे अच्छा दृष्टिकोण हो सकता है और इसलिए वर्तमान स्थिति के लिए एक महत्वपूर्ण अध्ययन है।

जैसा कि समुद्र तट कहते हैं, समाजशास्त्र का वर्तमान दुनिया की कई महत्वपूर्ण समस्याओं पर सीधे प्रभाव के माध्यम से सभी प्रकार के दिमागों के लिए एक मजबूत अपील है। गिडिंग्स ने सुझाव दिया है कि जिस तरह अर्थशास्त्र बताता है कि हम जो चीजें प्राप्त करना चाहते हैं उसे कैसे प्राप्त करें समाजशास्त्र हमें बताता है कि हम जो बनना चाहते हैं वह कैसे बनें। इस प्रकार, समाजशास्त्र समाज का वैज्ञानिक अध्ययन, एक महान सलाह का प्रतिनिधि बन जाता है।
समाज व्यक्तियों का सबसे बड़ा संगठन है। हर क्षेत्र में समाज की अपनी समस्याएं हैं। समाजशास्त्र के अध्ययन से ही समाज का वैज्ञानिक अध्ययन संभव हुआ है। समाज के अध्ययन का न केवल आधुनिक जटिल समाज में मूल्य है, बल्कि यह अपरिहार्य हो जाता है।

समाज का अध्ययन सामाजिक नीतियों के निर्माण में योगदान देता है जिसके लिए उस समाज के बारे में निश्चित मात्रा में ज्ञान की आवश्यकता होती है। वर्णनात्मक समाजशास्त्र बहुत अधिक जानकारी प्रदान करता है जो सामाजिक नीति पर निर्णय लेने में सहायक होता है।

सामाजिक समस्याओं के अध्ययन और सामाजिक कार्य और सामाजिक समायोजन में समाजशास्त्र के व्यावहारिक पहलू का भी बहुत महत्व है। एक सामाजिक समस्या निश्चित रूप से एक साथ अच्छे और खुशी से रहने वाले लोगों की है। इसे प्राप्त करने के लिए आवश्यक समायोजन करने के लिए समाज के वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता है।

समाजशास्त्र के व्यावहारिक पक्ष का एक अन्य विशिष्ट पहलू महान सामाजिक संस्थाओं और उनमें से प्रत्येक के साथ व्यक्ति के संबंध का अध्ययन है। इसलिए, इन संस्थानों को मजबूत करने की एक विशेष आवश्यकता है और उनकी समस्याओं और स्थितियों का वैज्ञानिक अध्ययन पहली अनिवार्यता है। समाजशास्त्र ने समाज की कई विकृतियों के कारणों का विश्लेषण किया है और उन्हें ठीक करने के उपाय सुझाए हैं। समाज एक जटिल संरचना है। यदि इनकी समस्याओं का समाधान करना है तो इसका वैज्ञानिक अध्ययन होना चाहिए।

अन्य सामाजिक विज्ञान के साथ संबंध

नृविज्ञान समग्र रूप से समाज की बजाय समाज में व्यक्तिगत संस्कृतियों से संबंधित है। परंपरागत रूप से, यह इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि "आदिम" संस्कृतियों को क्या कहा जा सकता है, जैसे कि दक्षिण अमेरिकी जंगल के यानोमो लोग, जो सैकड़ों साल पहले उसी तरह रहते थे। मानवविज्ञानी भाषा, रिश्तेदारी के पैटर्न और सांस्कृतिक कलाकृतियों पर विशेष जोर देते हैं।

राजनीति विज्ञान विभिन्न समाजों की सरकारों से संबंधित है। यह इस बात पर विचार करता है कि किसी समाज में किस प्रकार की सरकार है, उसका गठन कैसे हुआ और व्यक्ति किसी विशेष सरकार के भीतर सत्ता के पदों को कैसे प्राप्त करता है। राजनीति विज्ञान भी समाज में लोगों के संबंध से संबंधित है, चाहे उनकी सरकार का कोई भी रूप हो।

मनोविज्ञान व्यक्ति को उसकी सामाजिक परिस्थितियों से बाहर निकालता है और उस व्यक्ति के भीतर होने वाली मानसिक प्रक्रियाओं की जांच करता है। मनोवैज्ञानिक स्मृति, सपने, सीखने और धारणा जैसे मुद्दों पर विचार करते हुए मानव मस्तिष्क का अध्ययन करते हैं और यह कैसे कार्य करता है।

अर्थशास्त्र समाज की वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन और वितरण पर केंद्रित है। अर्थशास्त्री इस बात का अध्ययन करते हैं कि क्यों एक समाज उत्पादन करना चुनता है कि वह क्या करता है, पैसे का आदान–प्रदान कैसे होता है, और कैसे लोग माल का उत्पादन करने के लिए बातचीत और सहयोग करते हैं।

समाज, समुदाय, संघ, संस्था, सामाजिक समूह, लोकमार्ग और मोरे

समाज

समाज उन लोगों का संगठन है जिनके संबंध एक दूसरे के साथ हैं। मैक्लेवर समाज को रिश्तों के जाल के रूप में वर्णित करता है। समाज की कई परिभाषाएँ हैं। उनमें से अधिकांश समाज की निम्नलिखित विशेषताओं की ओर इशारा करते हैं।

व्यक्तियों के एक समूह को समाज कहने की पहली शर्त उनमें एक दूसरे के बारे में जागरूकता है। जब व्यक्ति दूसरों की उपस्थिति के बारे में जागरूक होते हैं तभी वे एक सामाजिक संबंध बना सकते हैं।

कोई भी दो व्यक्ति या वस्तुएँय एक दूसरे के संबंध में कहा जाता है जब आपसी बातचीत होती है और जब एक की कार्रवाई दूसरे को प्रभावित करती है। इस प्रकार एक समाज में व्यक्ति दूसरों के व्यवहार से प्रभावित होते हैं।

समुदाय

मनुष्य अलगाव में नहीं रह सकता। वह अकेला नहीं रह सकता। वह अपने अस्तित्व के लिए अपने साथी प्राणियों के संपर्क में रहता है। उसके लिए सभी लोगों के साथ संपर्क बनाए रखना या दुनिया में मौजूद सभी समूहों के सदस्य के रूप में शामिल होना संभव नहीं है।

वह कुछ लोगों के साथ संपर्क स्थापित करता है जो किसी विशेष क्षेत्र या इलाके में उसके निकट या उपस्थिति में रहते हैं। किसी विशेष इलाके में लंबे समय तक रहने वाले लोगों के लिए आपस में एक तरह की समानता या समानता विकसित करना काफी स्वाभाविक है। वे सामान्य विचारों, सामान्य रीति–रिवाजों, सामान्य भावनाओं, सामान्य परंपराओं आदि का विकास करते हैं।

वे एक साथ होने की भावना या हम महसूस करने की भावना भी विकसित करते हैं। एक विशिष्ट इलाके में इस तरह का सामान्य सामाजिक जीवन समुदाय को जन्म देता है। समुदाय के उदाहरणों में एक गाँव, एक जनजाति, एक शहर या कस्बा शामिल हैं। उदाहरण के लिए, एक ग्राम समुदाय में, कृषि और अन्य व्यवसायों में आवश्यकता पड़ने पर सभी ग्रामीण एक–दूसरे का हाथ बंटाते हैं।

संगठन

एक संघ एक विशेष उद्देश्य या सीमित उद्देश्यों के लिए संगठित लोगों का एक समूह है। एक संघ का गठन करने के लिए, सबसे पहले, लोगों का एक समूह होना चाहिएय दूसरे, इन लोगों को संगठित होना चाहिए।

तीसरा, उनका पीछा करने के लिए एक विशिष्ट प्रकृति का एक सामान्य उद्देश्य होना चाहिए। इस प्रकार, परिवार, चर्च, ट्रेड यूनियन, संगीत क्लब सभी संघ के उदाहरण हैं।

संघों का गठन कई आधारों पर किया जा सकता है, उदाहरण के लिए, अवधि के आधार पर, यानी अस्थायी या स्थायी जैसे बाढ़ राहत संघ जो अस्थायी है और राज्य जो स्थायी हैरू या शक्ति के आधार पर, अर्थात संप्रभु जैसे राज्य, अर्ध–संप्रभु जैसे विश्वविद्यालय और गैर–संप्रभु जैसे क्लब, या समारोह के आधार पर, यानी परिवार की तरह जैविक, ट्रेड यूनियन या शिक्षक संघ जैसे व्यावसायिक, टेनिस क्लब या संगीत क्लब जैसे मनोरंजक, परोपकारी जैसे धर्मार्थ समाज।

संस्थान

संस्था सामाजिक संरचना है जिसमें लोग सहयोग करते हैं और जो लोगों के व्यवहार और उनके जीने के तरीके को प्रभावित करते हैं। एक संस्था का एक उद्देश्य होता है। संस्थाएँ स्थायी होती हैं, जिसका अर्थ है कि एक व्यक्ति के चले जाने पर वे समाप्त नहीं होती हैं। एक संस्था के नियम होते हैं और वह मानव व्यवहार के नियमों को लागू कर सकता है। "संस्था" शब्द का प्रयोग दो प्रकार से किया जा सकता है। इसका मतलब बहुत व्यापक विचार या बहुत विशिष्ट" (संकीर्ण) हो सकता है।

संस्थाएं "स्थिर, मूल्यवान, व्यवहार के आवर्ती पैटर्न" हैं। सामाजिक व्यवस्था के ढांचे या तंत्र के रूप में, वे किसी दिए गए समुदाय के भीतर व्यक्तियों के एक समूह के व्यवहार को नियंत्रित करते हैं। जीवित व्यवहार को नियंत्रित करने वाले नियमों की मध्यस्थता करके संस्थाओं की पहचान एक सामाजिक उद्देश्य से की जाती है, जो व्यक्तियों और इरादों से आगे निकल जाते हैं।

सामाजिक व्यवस्था के ढांचे और तंत्र के रूप में, संस्थान सामाजिक विज्ञान जैसे राजनीति विज्ञान, नृविज्ञान अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र में अध्ययन का एक प्रमुख उद्देश्य (बाद में एमिल दुर्खीम द्वारा "संस्थानों का विज्ञान, उनकी उत्पत्ति और उनके कामकाज" के रूप में वर्णित) हैं। राजनीतिक नियम बनाने और लागू करने के लिए औपचारिक तंत्र कानून के लिए संस्थान भी एक केंद्रीय चिंता का विषय हैं।
संस्थानों के उदाहरणों में शामिल हैं:

परिवार

परिवार बच्चे के जीवन का केंद्र होता है, क्योंकि शिशु पूरी तरह से दूसरों पर निर्भर होते हैं। परिवार बच्चों को अपने और दूसरों के बारे में सांस्कृतिक मूल्य और दृष्टिकोण सिखाता है – परिवार का समाजशास्त्र देखें, बच्चे लगातार उस वातावरण से सीखते हैं जो वयस्क बनाते हैं। बच्चे भी बहुत कम उम्र में ही कक्षा के प्रति जागरूक हो जाते हैं और उसी के अनुसार प्रत्येक कक्षा को अलग–अलग मूल्य प्रदान करते हैं।

धर्म

कुछ का मानना है कि धर्म एक जातीय या सांस्कृतिक श्रेणी की तरह है, जिससे व्यक्तियों के धार्मिक जुड़ाव से टूटने और इस सेटिंग में अधिक सामाजिक होने की संभावना कम हो जाती है। माता–पिता की धार्मिक भागीदारी धार्मिक समाजीकरण का सबसे प्रभावशाली हिस्सा है – धार्मिक साथियों या धार्मिक विश्वासों की तुलना में अधिक।

मित्र मंडली

एक सहकर्मी समूह एक सामाजिक समूह है जिसके सदस्यों के हित, सामाजिक स्थिति और उम्र समान होती है। यह वह जगह है जहाँ बच्चे पर्यवेक्षण से बच सकते हैं और अपने दम पर संबंध बनाना सीख सकते हैं। सहकर्मी समूह का प्रभाव आमतौर पर किशोरावस्था के दौरान चरम पर होता है, हालांकि सहकर्मी समूह आमतौर पर केवल अल्पकालिक हितों को प्रभावित करते हैं, परिवार के विपरीत जिसका दीर्घकालिक प्रभाव होता है।

जबकि संस्थाएं समाज में लोगों को उनके जीवन के प्राकृतिक, अपरिवर्तनीय परिदृश्य के हिस्से के रूप में प्रकट होती हैं, सामाजिक विज्ञान द्वारा संस्थानों का अध्ययन सामाजिक निर्माण, एक विशेष समय की कलाकृतियों, संस्कृति और समाज के रूप में संस्थानों की प्रकृति को प्रकट करता है। सामूहिक मानवीय पसंद से, हालांकि सीधे व्यक्तिगत इरादे से नहीं। सामाजिक भूमिकाओं और अपेक्षाओं को आपस में जोड़ने के संदर्भ में समाजशास्त्र ने पारंपरिक रूप से सामाजिक संस्थाओं का विश्लेषण किया। सामाजिक संस्थाएँ बनाई गई हैं और भूमिकाओं के समूहों, या अपेक्षित व्यवहारों से बनी हैं। संस्था के सामाजिक कार्यों को भूमिकाओं की पूर्ति के द्वारा क्रियान्वित किया जाता था। बच्चों के प्रजनन और देखभाल के लिए बुनियादी जैविक आवश्यकताओं की पूर्ति विवाह और परिवार की संस्थाओं द्वारा की जाती है, उदाहरण के लिए, पतिधपिता, पत्नीध्माता, बच्चे, आदि के लिए अपेक्षित व्यवहारों को बनाना, विस्तृत करना और निर्धारित करना।

सामाजिक समूह

सामाजिक विज्ञान में, एक सामाजिक समूह को दो या दो से अधिक लोगों के रूप में परिभाषित किया गया है जो एक दूसरे के साथ बातचीत करते हैं, समान विशेषताओं को साझा करते हैं, और सामूहिक रूप से एकता की भावना रखते हैं। अन्य सिद्धांतकार हालांकि असहमत हैं, और उन परिभाषाओं से सावधान हैं जो अन्योन्याश्रितता या उद्देश्य समानता के महत्व पर जोर देते हैं। इसके बजाय, सामाजिक पहचान परंपरा के भीतर शोधकर्ता आमतौर पर इसे एक समूह के रूप में परिभाषित करते हैं जो समूह के सदस्यों के रूप में खुद को पहचानते हैं। भले ही, सामाजिक समूह असंख्य आकार और किस्मों में आते हैं। उदाहरण के लिए, एक समाज को एक बड़े सामाजिक समूह के रूप में देखा जा सकता है।

एक सामाजिक समूह कुछ हद तक सामाजिक सामंजस्य प्रदर्शित करता है और एक साधारण संग्रह या व्यक्तियों के समूह से अधिक होता है, जैसे कि बस स्टॉप पर प्रतीक्षा करने वाले लोग, या एक पंक्ति में प्रतीक्षा करने वाले लोग। एक समूह के सदस्यों द्वारा साझा की गई विशेषताओं में रुचियां, मूल्य, प्रतिनिधित्व, जातीय या सामाजिक पृष्ठभूमि और रिश्तेदारी संबंध शामिल हो सकते हैं। सामान्य वंश, विवाह या गोद लेने पर आधारित सामाजिक बंधन होने के नाते नातेदारी संबंध। इसी तरह, कुछ शोधकर्ता एक समूह की परिभाषित विशेषता को सामाजिक संपर्क के रूप में मानते हैं। डनबर की संख्या के अनुसार, औसतन, लोग 150 से अधिक व्यक्तियों के साथ स्थिर सामाजिक संबंध नहीं बनाए रख सकते हैं।

लोकमार्ग

लोकमार्ग दैनिक जीवन के रीति–रिवाज या परंपराएं हैं। हम कैसे कार्य करते हैं, इसके लिए वे एक प्रकार के सामाजिक मानदंड–अपेक्षाएं हैं। समाजशास्त्र में, लोकमार्गों पर आम तौर पर रीति–रिवाजों के विपरीत चर्चा की जाती है क्योंकि वे दोनों प्रकार के सामाजिक मानदंड हैं, हालांकि वे उस डिग्री में भिन्न होते हैं जिस पर उन्हें लागू किया जाता है। लोकमार्ग सामाजिक अपेक्षाओं को हल्के ढंग से लागू करते हैं, जबकि व्यवहार व्यवहार के बारे में सख्ती से विश्वास रखते हैं। मोरेस सही और गलत को तय करते हैं, जबकि लोकगीत उचित और अशिष्ट व्यवहार के बीच अंतर करते हैं।

लोकमार्ग, सीखा हुआ व्यवहार, एक सामाजिक समूह द्वारा साझा किया जाता है, जो आचरण का एक पारंपरिक तरीका प्रदान करता है। अमेरिकी समाजशास्त्री विलियम ग्राहम सुमनेर के अनुसार, जिन्होंने इस शब्द को गढ़ा, लोकमार्ग सामाजिक परंपराएं हैं जिन्हें समूह के सदस्यों द्वारा नैतिक महत्व का नहीं माना जाता है (उदाहरण के लिए, टेलीफोन के उपयोग के लिए प्रथागत व्यवहार)। समूहों के लोकमार्ग, व्यक्तियों की आदतों की तरह, उन कृत्यों की बार–बार पुनरावृत्ति से उत्पन्न होते हैं जो बुनियादी मानवीय जरूरतों को पूरा करने में सफल साबित होते हैं। ये अधिनियम एक समान हो जाते हैं और व्यापक रूप से स्वीकार किए जाते हैं। लोकमार्ग मुख्य रूप से अचेतन स्तर पर काम करते हैं और बने रहते हैं क्योंकि वे समीचीन हैं। वे खुद को प्रमुख सामाजिक सरोकारों के

इर्द–गिर्द समूहित करते हैं, जैसे कि सेक्स, सामाजिक संस्थाएँ (जैसे, परिवार) बनाना। सुमनेर का मानना था कि जीवन के विविध क्षेत्रों के लोकमार्ग एक दूसरे के साथ सुसंगत हो जाते हैं, निश्चित पैटर्न बनाते हैं।

आचार–विचार

आचार–विचार को प्रारंभिक अमेरिकी समाजशास्त्री विलियम ग्राहम सुमनेर (1840–1910) द्वारा सामाजिक मानदंडों का उल्लेख करने के लिए पेश किया गया था जो व्यापक रूप से देखे जाते हैं और जिन्हें दूसरों की तुलना में अधिक नैतिक महत्व माना जाता है। आचार–विचार में अनाचार जैसे सामाजिक वर्जनाओं के प्रति घृणा शामिल है। एक समाज के रीति–रिवाज आमतौर पर उनकी वर्जनाओं को प्रतिबंधित करने वाले कानून की भविष्यवाणी करते हैं। अक्सर देश विशेष वाइस स्क्वॉड या वाइस पुलिस नियुक्त करेंगे जो सामाजिक रीति–रिवाजों को ठेस पहुंचाने वाले विशिष्ट अपराधों को दबाने में लगे हुए हैं।